शीघ्र ईश्वरप्राप्ति हेतु 'गुरुकृपायोग' : खण्ड २

गुरुकृपायोगकी महिमा

(अन्य योगमार्गोंकी तुलनामें गुरुकृपायोग श्रेष्ठ !)

भूमिका

ईश्वरप्राप्तिके लिए कर्मयोग, भक्तियोग, ध्यानयोग, ज्ञानयोग आदि विविध योगमार्ग (साधनामार्ग) हैं । इनमें एक है 'गुरुकृपायोग', जिसमें सभी योगमार्गोंका समावेश है । इसीलिए, गुरुकृपायोगानुसार साधना करनेवाले साधकको किसी विशेष साधनामार्गका आश्रय नहीं लेना पडता, उसकी आध्यात्मिक उन्नति सहज, सर्वांगीण और दूसरे योगमार्गोंकी तुलनामें शीघ्र होती है । इसलिए, 'गुरुकृपायोग'को ईश्वरप्राप्तिका सर्वश्रेष्ठ 'सहजयोग' भी कहा गया है ।

केवल अपने बलपर साधना कर ईश्वरको प्राप्त करना, अति कठिन होता है । इसकी अपेक्षा अध्यात्मके किसी अधिकारी व्यक्ति अर्थात गुरु अथवा सन्त के मार्गदर्शनमें साधना करनेसे ईश्वरप्राप्तिका ध्येय शीघ्र साध्य होता है । यही गुरुकृपाकी विशेषता है । गुरु, शिष्यका अज्ञान दूर कर अहंकार घटाते हैं । इसलिए, उनकी बताई हुई साधना करनेसे आध्यात्मिक उन्नति शीघ्र होती है ।

गुरुकृपायोगका महत्त्व क्या है, गुरुकृपायोगानुसार साधना करनेसे अन्य सांप्रदायिक साधना एवं योगमार्गोंकी तुलनामें अल्पावधिमें आध्यात्मिक उन्नति क्यों और कैसे होती है, गुरुकृपायोगमें मृत्युके पहले और पश्चात भी साधक जीवपर गुरुकृपा कैसे बनी रहती है ? ऐसे विविध विषयोंका मार्गदर्शक यह ग्रन्थ आपको एक नए ज्ञानविश्वमें ले जाता है।

इस ग्रन्थमें समाविष्ट ज्ञान सनातनके साधकोंको प्राप्त हुए हैं, जो साधारण व्यक्तिको समझनेमें कुछ कठिन है । परन्तु, जो साधना करता है, उसे यह ज्ञान कठिन नहीं लगेगा । जिसमें जिज्ञासा और लगन है, ऐसे प्राथमिक अवस्थाके साधकको भी इस ज्ञानका आंकलन हो सकता है ।

प्रत्येक व्यक्ति इस ग्रन्थमें प्रकाशित ज्ञानका उपयोग कर अपनी साधना बढाए और उस माध्यमसे ईश्वरप्राप्ति करे, यह श्री गुरुसे प्रार्थना !

– संकलनकर्ता

हिन्दू संस्कार एवं परम्पराओंसम्बन्धी ग्रन्थ

- **त्योहार मनानेकी उचित पद्धतियां एवं अध्यात्मशास्त्र**
- **धार्मिक उत्सव एवं व्रतोंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार**

ईश्वरप्राप्ति हेतु उचित साधनासंबंधी मार्गदर्शक सनातनका ग्रन्थ !

नामजपका महत्त्व एवं लाभ

- ईश्वरके रूपसे उनका नाम महत्त्वपूर्ण क्यों है ?
- नामजपसे कष्ट व दु:खका परिहार कैसे होता है ?
- 'नाम' सदाचारी व पापी, सभीका तारक कैसे है ?
- शुभकर्म एवं ध्यानसे नामजप श्रेष्ठ क्यों है ?
- नामजपके शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक लाभ कौनसे हैं ?

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

१. गुरुकृपायोग १०

१ अ. एवं १ आ. अर्थ, उत्पत्ति एवं स्थिति १०

१ इ. महत्त्व १०

१ ई. विशेषताएं २४

१ उ. गुरुकृपा किस प्रकार कार्य करती है ? ३८

२. गुरुकृपायोग एवं अन्य योगमार्गोंकी तुलना ४४

२ अ. गुरुकृपायोग अर्थात ‘विहंगम योग’ एवं अन्य योग अर्थात ‘भासमान योग’ तथा उनके कारण ‘वियोग’ होना ४४

२ आ. विशिष्ट योगमार्ग एवं गुरुकृपायोग ४५

२ इ. आध्यात्मिक स्तरानुरूप विविध योगमार्गानुसार साधना ५३

२ ई. उन्नतिके लक्षण २ उ. आध्यात्मिक उन्नति ५७

२ ऊ. गुरुद्वारा बताई साधना तथा अपने मनसे की गई विभिन्न योगमार्गोंकी साधनाके प्रगतिके चरणोंका स्थूल अध्ययन ६३

२ ए. ‘गुरुकृपायोगसे जीव स्वावलंबी बनता है । ६८

२ ऐ. ईश्वरीय कृपा ६८

३. अनिष्ट शक्तियोंसे होनेवाले कष्ट एवं गुरुकृपायोग ६८

३ अ. मान्त्रिकोंसे कष्ट होनेपर भी, साधकोंद्वारा गुरुकृपायोगके अनुसार समष्टि कार्य जारी रखनेसे क्रुद्ध मान्त्रिकोंद्वारा कष्ट पहुंचाना ६८

३ आ. गुरुकृपायोगानुसार साधना करनेवाले साधकको अनिष्ट शक्तिद्वारा गुरुरूप अथवा उपास्यदेवताका रूप लेकर अधिक कालतक भ्रमित न कर पाना ६९

३ इ. गुरुकृपायोगानुसार साधना करनेवाले निर्गुण तत्त्वके उपासक होनेके कारण तथा उनका स्वभाव अध्ययनशील होनेके कारण, ऐसे साधकोंको मोहिनीरूपद्वारा फंसानेके मान्त्रिकोंके प्रयास केवल १० प्रतिशत सफल होना ६९

३ ई. गुरुकृपायोगद्वारा साधकोंको समष्टि साधनासे निर्गुण भक्ति सिखाने के कारण, सप्तदेवताओंके आशीर्वाद एवं परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीकी संकल्पशक्तिके कारण साधकोंका मान्त्रिकोंके जालमें न फंसना ७०

३ उ. स्वभावदोष अल्प करनेसे मनोलय एवं बुद्धिलय होकर समाजमें धर्मकार्य करना, यही गुरुकृपायोगकी सीख ७०

३ ऊ. ईश्वरको प्रिय सत्त्वगुण ऊर्जास्वरूप होनेके कारण उसके द्वारा रज-तम गुणी असुरी शक्तियोंको पराजित करना सम्भव तथा गुरुकृपायोगसे यह साध्य होना ७१

३ ए. आसुरी शक्तियोंका स्थायी समाधान है, गुरुकृपायोगमें बताई क्षात्रधर्म साधना करना ७१

४. ईश्वरीय राज्यकी स्थापना एवं गुरुकृपायोग ७२

४ अ. 'गुरुकृपायोगके अनुसार साधना करते समय हानि सहनेवाला तथा क्षात्रतेज एवं ब्राह्मतेज युक्त साधक, मोक्षप्राप्तिका अधिकारी होना व उसका ईश्वरीय राज्य निर्मित कर पाना ७२

४ आ. गुरुकृपायोगमें ईश्वरीय राज्यके लिए साधना, समष्टि साधना एवं व्यष्टि साधनाके त्रिवेणी संगमके योगसे साधकोंकी उन्नति शीघ्र होना एवं ईश्वरीय राज्यकी स्थापना संभव ७३

४ इ. गुरुकृपायोगानुसार साधना करनेसे ईश्वरीय राज्य स्थापित होनेकी प्रक्रिया ७४

ईश्वरप्राप्ति हेतु उचित साधना सिखानेवाला सनातनका ग्रन्थ

अध्यात्मका प्रस्तावनात्मक विवेचन